CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'मास्टर' मणिमालायाः १२ संख्यको मणिः (ज्यौतिषविभागे ५)

❀ श्रीः ❀

लग्नप्रदीपः

[प्रथमप्रकाशः]

सम्पादकः—
पं० श्रीसीतारामझा ज्यौ० आ०-तीर्थ

प्रकाशकः—
मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स
कचौड़ीगली, बनारस-१
मूल्यम् ।≈)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ श्रीः ❀

मिथिलादेशान्तर्गतचौगमानिवासि-ज्यौतिषाचार्य-तीर्थ-

पं० श्रीसीतारामशर्म-

सम्पादितस्य

लग्नप्रदीपस्य

सोदाहरण-ग्रहभावस्पष्टीकरणरूपः

प्रथमप्रकाशः ।

—:❀:—

स्वयमेव संशोधितः ।

—o—

काशीस्थ-'संस्कृत बुकडिपो'ऽधिपतिभिः

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स महोदयः

स्वीये 'मास्टर-प्रिण्टिङ्ग-वर्क्सी'ऽभिधयन्त्रालये

मुद्रापयित्वा प्रकाशितः ।

—o❀o—

सन् १९५१ ई०] अधिकारः सुरक्षितः [मूल्यम्]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशकः—

बी० एन० यादव, प्रोप्राइटर,

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,

कचौड़ीगली, बनारस–१

मुद्रकः—

श्रीमन्नालाल अभिमन्यु, एम० ए०

मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स,

बुलानाला बनारस–१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

K.K.Sharma Collection
19.12.81

भूमिका

स्पष्ट लग्न के आधार से ही ज्यौतिष शास्त्र द्वारा समस्त शुभाशुभ फल का निर्णय किया गया है। किन्तु लग्न की स्पष्टता ग्रह के आधीन तथा ग्रह की स्पष्टता भगोल के आधीन तथा भगोल का ज्ञान गणित के आधीन है। इसलिये गणित के पूर्ण ज्ञान विना स्पष्ट ग्रह और स्पष्ट लग्न का ज्ञान होना कठिन है। आज कल लोग स्थूल लग्नसारिणी आदि द्वारा लग्न बनाकर जन्मपत्री आदि बना लिया करते हैं। उसमें कितने अंशों का अन्तर हो जाने का सम्भव रहता है। इसलिये मैंने एक 'लग्नपत्र-प्रदीप' नामक विशद ग्रन्थ (अनेक भागों में) लिखना आरम्भ किया है। इसमें जन्मलग्न, वर्षलग्न प्रश्नलग्न सम्बन्धी सब विषय सोदाहरण स्पष्टरूप से दिखलाये जायँगे। जिससे जन्मपत्र, वर्षपत्र आदि लिखने वालों को किसी दूसरे ग्रन्थों से कुछ भी उदाहरण ढूँढ़ने की आवश्यकता न पड़ेगी। इस प्रथम प्रकाश में आवश्यक परिभाषा, घण्टा मिनट पर से घट्यादि इष्टकाल बनाना, ग्रहस्पष्टीकरण, भयात, भभोग, चन्द्रस्पष्टीकरण, पलभा, चरखण्डा, लंकोदय से स्वदेशोदय, अयनांश और ससन्धि लग्नादि द्वादश भावों के सविशेष साधन दिखलाये गये हैं।

इसमें जो कुछ त्रुटियाँ रह गई हों और वे जिन महानुभावों को दृष्टिगोचर हों वे कृपया सूचित करेंगे तो मैं उनका चिरकृतज्ञ बनकर अग्रिम प्रकाश में उन त्रुटियों को पूर्ति कर दूँगा। मुद्रणादि में दृष्टिदोषवश जो कुछ स्खलन हुआ हो तदर्थ क्षमा प्रार्थी—

विनीत—

श्रीसीताराम झा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सादरं समर्पणम्—

'मास्टर'मणिमालाया मणिरेष द्वादशः क्रमाज्जातः ।
ज्यौतिषशास्त्रविभागे पञ्चम एवेति नतशिरसा ॥
श्रीविश्वेशपदेभ्यः सादरमादौ समर्प्यते भक्त्या ।
तद्गुणकीर्तन-दर्शन-जातसुखेन प्रकाशकेन मया ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ श्रीः ❀

ग्रहभावस्पष्टीकरण—

मङ्गलाचरणम् ।

श्रीगणेशपदाम्भोजं ध्यात्वा सोदाहृतिं ब्रुवे ।
लग्नपत्रप्रदीपेऽहं ग्रह-भाव-स्फुटक्रियाम् ॥१॥

श्रीगणेशजी के चरणकमलों के ध्यान करके 'लग्नपत्रप्रदीप' नामक ग्रन्थ में प्रथम ग्रह और भावों की स्पष्टीकरण क्रिया को कहता हूँ ॥ १ ॥

समय परिभाषा (सावनमान)—

६० विपल का = १ पल
६० पल की = १ घड़ी (दण्ड)
६० दण्ड का = १ अहोरात्र
३० अहोरात्र का = १ मास
१२ मास का = १ वर्ष

अंग्रेजी समय

६० सेकेण्ड का = १ मिनट
६० मिनट का = १ घण्टा
२४ घण्टा का = १ अहोरात्र

राशि परिभाषा (सौरमान)—

६० प्रतिविकला की = १ विकला = १ पल
६० विकला की = १ कला = १ घड़ी
६० कला का = १ अंश = १ दिन
३० अंश की = १ राशि = १ मास
१२ राशि का = १ भगण = १ वर्ष

इसलिए—

२॥ दण्ड का = १ घण्टा = होरा
२॥ पल का = १ मिनिट
२॥ विपल का = १ सेकेण्ड

नवीन साङ्केतिक चिह्न—

= यह बराबर का चिह्न है ।
+ यह जोड़ का चिह्न है ।
— यह घटाव का चिह्न है ।
× यह गुना का चिह्न है ।
÷ यह भाग का चिह्न है ।

² यह वर्ग का चिह्न है ।
$\sqrt{\ }$ यह मूल का चिह्न है ।
° यह अंश तथा घड़ीबोधक है ।
। यह कला तथा पल बोधक ।
॥ यह विकला तथा विपलबोधक है ।
ऽ यह अन्तर बोधक है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घण्टा मिनिट पर से घट्यादि इष्टकाल—

सूर्योदयात् गतः कालो घट्याद्योऽभीष्ट उच्यते ।
होरादिकं तु पञ्चघ्नं द्वयासं घट्यादिकं भवेत् ॥ २ ॥

सूर्योदय से गत घट्यादि समय लग्न आदि साधन में इष्टकाल कहलाता है। यदि होरा (अर्थात् घण्टा मिनट) आदि मालूम हो तो उसे ५ से गुना कर २ से भाग देने से घट्यादिक इष्टकाल हो जाता है। उसमें तीन भेद हैं। यथा—

(१) दिन के पूर्वार्ध में (सूर्योदय से १२ बजे दिन तक) जितने घण्टा और मिनिट हो उसमें सूर्योदय के घण्टा मिनट घटाकर शेष पर से घट्यादि बनाने से इष्टकाल होता है।

(२) १२ बजे दिन के बाद १२ बजे रात्रि तक के घण्टा मिनिट पर से घट्यादि काल बनाकर दिनार्ध में जोड़ने से इष्टकाल होता है।

(३) १२ बजे रात्रि के बाद सूर्योदय तक के घण्टा मिनिट पर से घट्यादि बनाकर दिन मान और रात्र्यर्ध के योग में जोड़ने से इष्टकाल होता है ॥२॥

उदाहरण—शाके १८४८ संवत् १९८३ सन् १३३४साल माघ शुक्ल ११ शनिवार प्रातःकाल ७ बज कर ५१ मिनिट पर मिथिला देश में किसी का जन्म हुआ तो उस दिन के सूर्योदय घण्टा मिनिट ६।२९ को जन्मसमय के घण्टा मिनिट ७।५१ में घटाने से शेष सूर्योदय से घण्टा मिनिट १।२२ काल हुआ, इसको ५ से गुना कर ५।११०=६।५० इसमें २ के भाग देने से घट्यादि ३।२५ दिन के पूर्वार्ध में है इसलिये यही इष्टकाल हुआ। शनिवार है इसलिये दिन के स्थान में ७ रखने से दिनादि इष्टकाल=७।३।२५ हुआ ॥२॥

पञ्चाङ्गस्थ ग्रह में चालन देकर स्पष्टीकरण—

ऋणाख्यं चालनं ज्ञेयमग्रपङ्क्तीष्टकालयोः ।
अन्तरं, तु धनाख्यं स्यात् पृष्ठपङ्क्तीष्टकालयोः ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनर्णचालनेनैवं गतिर्निघ्नी खषड्हृता ।
लब्धांशांद्यैर्युतो हीनः पंक्तिखेटः स्फुटो भवेत् ॥ ४ ॥

(पञ्चांग में जिस दिन के स्पष्ट ग्रह बने रहते हैं वह दिनादि पंक्ति कहलाती है) इष्टकाल से अग्रिम पंक्ति और इष्टकाल के दिनादि अन्तर ऋणचालन, तथा पिछली पंक्ति और इष्टकाल के दिनादि अन्तर धनचालन होता है। इस प्रकार दिनादि धनचालन से पंक्तिस्थ ग्रहों की कालादि गति को गुना कर ६० के भाग देने से लब्धि अंशादि को पंक्तिस्थ ग्रहों में जोड़ने से, तथा दिनादि ऋणचालन से गति को गुनाकर ६० के भाग देने से अंशादि फल को पंक्तिस्थग्रहों में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह हो जाते हैं ॥ यथा–माघशुक्ल ११ दिनादि इष्टकाल ७।३।२५

पंक्ति माघ शुक्ल ६ सोम.
मिश्रमान ४३।४९

र.	मं.	बु	वृ	शु.	श.	रा.
९	०	१०	१०	०	७	२
२५	२८	६	१२	१४	१३	१४
१३	५०	४३	३८	४	८	९
२१	४०	५	४३	३५	३८	१८
६०	२८	९५	१३	७४	४	३
५६	४७	३८	२४	३१	१०	११

पंक्ति. माघ शुक्ल १३ सोम
मिश्रमान ४३।५०

र.	मं.	बु	वृ.	शु.	श.	रा.
१०	१	१०	१०	१०	७	२
२	२	१६	१४	२३	१३	१३
१९	१९	४५	१७	२३	३३	४७
१३	०	४१	५०	१६	३	३
६०	३०	८०	१३	७४	३	३
४३	५५	५३	४०	३१	१३	११

इन दोनों पंक्तियों में अग्रिम पंक्ति इष्टकाल के समीप है अतः अग्रिम पंक्ति दिनादि २।४३।५० में इष्टकाल दिनादि ७।३।२५ को घटाने से दिनादि ऋणचालन २।४०।२५ ॥ ३-४ ॥

विशेष—जहाँ अन्तर करने में दिन संख्या में दिन की संख्या न घटे वहाँ दिन संख्या में ७ जोड़कर घटाना चाहिये। इसी प्रकार राशि के स्थान में १२ जोड़कर घटाया जाता है। यहाँ पंक्ति की दिन संख्या २ में इष्टकालदिनसंख्या ७ नहीं घट सकती अतः इष्ट दिन संख्या २ में ७ जोड़कर ९ के साथ अन्तर किया गया है ॥ ३-४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खण्डगुणनरीति--

यज्जाति गुणखण्डं स्यात् तज्जातीयं फलं भवेत्।
ग्राह्यमर्धाधिके रूपं त्याज्यमर्धाल्पके तथा ॥ ५ ॥

यज्जातीय गुणक का खण्ड रहता है गुणनफल भी तज्जातीय होता है। तथा स्वल्पान्तर से आधा से अधिक हो तो वहाँ १ ग्रहण किया जाता है। तथा आधा से अल्प हो तो त्याग भी कर दिया जा सकता है॥ इसलिये चालन दिनादि को गति की कला से गुना करने से कलादि और गति की विकला से गुना करने से विकलादि फल होता है, इसलिये एक स्थान बढ़ाकर रखने से गोमूत्रिकाकार हो जाने के कारण गोमूत्रिका-गुणन कहलाता है। तथा यदि प्रतिविकला ३० से कम हो तो वहाँ १ विकला ग्रहण की जाती, ३० से कम हो तो छोड़ दी जाती है ॥ ५ ॥

अब दिनादि चालन २। ४०। २५ को पंक्तिस्थ सूर्य की कलादि गति ६०। ४३ से गुना करने के लिये न्यास--

तात्कालिकाः स्पष्टग्रहाः सगतिकाः--

र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	चन्द्र.
९	१	१०	१०	१०	७	२	२
२९	०	१३	१३	२०	१३	१३	६
३६	५६	९	४१	४	२४	५५	२२
५३	२०	२६	१८	२	२७	३४	५८
६०	३०	८०	१३	७४	३	३	८०६
४३	५५	५३	४०	३१	१३	११	३०

गुना करने से

(२। ४०। २५) × ६०′ = १२०′।२४००″।१५०० +
(२′। ४०′। २५) × ४३″ . = ८६।१७२०। १०७५
योग करने से गुणनफल १२०। २४८६। ३२२०। १०७५

इसमें ६० से भाग चढ़ाने से अंशादि २। ४२। १९। ५७ = २°। ४२′। २०″ स्वल्पान्तर से ५ श्लोकानुसार प्रतिविकला ५७ की जगह १ विकला ग्रहण करने से २°। ४२′। २०″ इसको ऋण चालन होने के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारण पंक्तिस्थ सूर्य १०।२।१९।१३ के अंशादि में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ९।२९।३६।५३ हुए ॥ इसी प्रकार मङ्गलादिक ग्रहों की गति से चालन देने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह हुए, चक्र देखो ॥५॥

विशेष—

अग्रपंक्तिग्रहोऽल्पश्चेत् पृष्ठपंक्तिस्थितादु भवेत् ।
तदा वक्रागतिर्ज्ञेयो व्यस्तं तच्चालनं स्मृतम् ॥ ६ ॥

यदि पीछे की पंक्ति से अग्रिमपंक्ति में मङ्गलादि ग्रह की राश्यादि अल्प हो तो उसे वक्रगति समझना। वक्रगति ग्रह का चालन विपरीत (धन में घटाने से, ऋण में जोड़ने से) होता है। अतः राहु केतु के चालन सदा विपरीत ही होता है ॥ ६ ॥

यहाँ पृष्ठ की पंक्ति से अग्रिम पंक्ति में भौमादि पाँचों ग्रह की राश्यादि अधिक ही है अतः सब के मार्ग गति होने के कारण सब में सूर्य के समान ही ऋण चालन फल घटाया गया है। केवल राहु में विपरीत अर्थात् ऋण चालन फल को जोड़ने से स्पष्टता हुई है ॥ ६ ॥

अथ चन्द्र स्पष्टीकरण—चन्द्रमा अधिक गति होने के कारण भयात और भभोग द्वारा ही स्पष्ट बनाये जाते हैं।

अतः भयात-भभोगपरिभाषा—

नक्षत्रारम्भतः स्वेष्टकालं यावद् गतं हि यत् ।
घट्यादिकं भयातं तद्, भस्य भोगो भभोगकः ॥ ७ ॥

वर्तमान नक्षत्र के आरम्भ से लेकर इष्टकाल पर्यन्त जितना समय (घड़ी पल) व्यतीत हुआ हो वह भयात तथा नक्षत्र के आरम्भ से अन्त तक का काल (घटी पल) भभोग कहलाता है ॥ इस प्रकार से पञ्चांग में नक्षत्र के घड़ी पल देख कर सहज में भयात भभोग बन जाता है॥७॥

अथवा इसी के स्पष्टतार्थ श्लोकान्तर—

षष्ट्या गतर्क्षघट्याढ्यं शोध्य स्वेष्टघटीयुतम् ।
भयातं स्यात्, तथा स्वर्क्षघटीयुक्तं भभोगकः ॥ ८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गत (वर्तमान से पहला) नक्षण को पञ्चांगस्थ घटी को ६० में घटा कर शेष में इष्ट काल जोड़ने से भयात और उसी शेष में वर्तमान नक्षत्र की पञ्चांगस्थ घटी जोड़ने से भभोग होता है ॥ ८ ॥

तथा—

पञ्चाङ्गर्क्षघटी-मानादि-इष्टकालोऽधिकस्तदा ।
तदन्तरं भयातं स्याद् भभोगः पूर्ववत् सदा ॥ ९ ॥

यदि प्रञ्चाङ्ग में लिखित नक्षत्र की घटी से इष्टकाल अधिक हो तो इष्टकाल में नक्षत्र की घटी घटाने से भयात होता है। भभोगपूर्ववत् बनाना चाहिये ॥ ९ ॥

इस प्रकार उक्त इष्टकाल में वर्तमान मृगशिरा नक्षत्र का भयात ५८। १५ तथा भभोग ५९। ३१ हुआ ॥ ९ ॥

सगति स्पष्टचन्द्र साधनार्थ नीलकण्ठोक्त प्रकार—

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्
खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ।
नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥ १० ॥

भयात के एकजातीय (पल) बनाकर उसको ६० से गुना करके फल में भभोग के एक जातीय पल से भाग देने से जो लब्धि हो उसमें ६० से गुनित अश्विनी आदि गत नक्षत्र संख्या को जोड़कर जो हो उसको २ से गुना कर ९ के भाग देने से लब्धि अंशादि तात्कालिक स्पष्ट चन्द्रमा होते हैं। तथा ४८००० अड़तालिस हजार अङ्क में भभोग से भाग देने से लब्धि कलादि चन्द्रमा की स्पष्टगति होती है ॥ १० ॥

उदाहरण—भयात ५८। १५। के एक जातीय ३४९५ को ६० से गुना करने से २०९७०० इसमें भभोग ५९। ३१ के एकजातीय ३५७१ से भाग देने से लब्धि—५८'। ४३"। २३' इसमें गत नक्षत्र रोहिणी संख्या ४ को ६० से गुनित २४० जोड़ने से २९८। ४३। २३ इसको २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से गुना करने से ५९७ । २६ । ४६ इसमें ९ के भाग देने से ६६ । २२ । ५८ यह अंशादि चन्द्रमा हुए, अंश में ३० से भाग देकर राश्यादि २ । ६ । २२ । ५८ स्पष्ट चन्द्रमा हुए । तथा भभोग के एक जातीय बनाने के कारण ४८००० इसको ६० से गुनाकर २८८०००० इसमें भभोग ५९ । ३१ के एक जातीय ३५७१ से भाग देने से चन्द्रमा की स्पष्ट गति कलादि ८०६ । ३० हुई ॥ १० ॥

तात्कालिक अयनांश साधनप्रकार--

एकद्विवेदोनशका नवघ्ना
दिग्भिर्हृताश्चायनलिप्तिकास्ताः ।
अंशीकृतार्कात् त्रिगुणान्नखाग्न-
तुल्याभिरेवं विकलाभिराढ्याः ॥ ११ ॥

इष्टशाके में ४२१ घटा कर शेष को ९ से गुनाकर १० के भाग देने से लब्धि अयन-कला होती है । तथा तात्कालिक स्पष्ट सूर्य को अंशात्मक बनाकर उसको ३ से गुनाकर २० के भाग देने से लब्धि अयन विकला जोड़कर कला में ६० के भाग देने से अयनांश होता है ॥ ११ ॥

उदा०—शाके १८४८ में ४२१ घटाने से १४२७ इसको ९ से गुनाकर १२८४३ इसमें १० के भाग देने से अयनकलादि १२८४' । १८' । इसमें स्पष्ट सूर्य ९।२९।३६।५३ अंशात्मक २९९।३६'।५३ को ३ से गुनाकर ८९८'। ५०।३९ इसमें २० के भाग देने से लब्धि विकलादि ४४।५६=४५ विकला जोड़कर कलादि १२८५। ३ इसके कला में ६० के भाग देकर अयनांश २१°। २५'। ३" हुए ॥ ११ ॥

अथ लग्न-परिभाषा—

भचक्रं प्राक्कुजे यत्र लग्नं तल्लग्नमुच्यते ।
पश्चात् कुजेऽस्तलग्नं स्यान् मध्यं याम्योत्तरे तथा॥१२॥

उदय क्षितिज में जो राशि इष्टकाल में वर्तमान हो वह प्रथम लग्न तथा अस्तक्षितिज में जो राशि हो वह सप्तम (अस्त) लग्न, तथा ऊर्ध्व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

याम्योत्तर में दशम और अधोयाम्योत्तर में चतुर्थ लग्न कहलाता है मध्य लग्न से दशम लग्न का बोध होता है।

जो राशि जितने समय तक क्षितिज में रहती वह पलात्मक सम उस राशि का उदयमान कहलाता है। वह हर एक राशि के भिन्न भि और पलभा के भेद से हरएक देश के भिन्न भिन्न मान होते हैं। अपने अपने देश के पलभा पर से चरखण्डा द्वारा बनते हैं॥ १२॥

पलभा परिभाषा और पलभा पर से चरखण्डानयन-(ग्रहलाघवोक्त)

"मेषादिगे सायनभागसूर्ये
दिनार्धजा भा पलभा भवेत् सा।
त्रिष्ठा हता स्युर्दशभिर्भुजङ्गै-
र्दिग्भिश्चरार्धानि गुणोद्धृतान्त्या" ॥ १३ ॥

सायन मेषार्क या सायन तुलार्क संक्रान्ति (३० दण्ड दिन मान) में मध्याह्नकालिक १२ अंगुल शंकु की छाया अंगुलादिक पलभा कहलाती है। उसको ३ स्थान में रखकर प्रथम स्थान में १० से गुना करना, द्वितीय स्थान में ८ से गुना करना और तृतीय स्थान में १० से गुनाकर ३ से भाग देना तो क्रम से ३ चरखण्ड होते हैं॥ १३॥

उदाहरण--यथा काशी की पलभा अंगुलादि ५।४५॥ और मिथिला की पलभा = ६ अंगुल है। अतः उक्तरीति से

काशी के चरखण्ड	मिथिला के चरखण्ड
(५।४५) × १० = ५७ स्वल्पान्तर से	६ × १० = ६०
(५।४५) × ८ = ४६ "	६ × ८ = ४८
$\frac{(५।४५) \times १०}{३}$ = १९ "	$\frac{६ \times १०}{३}$ = २०

लङ्कोदय से चरखण्ड द्वारा स्वदेशोदय साधन--

"लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोङ्क-
दस्राग्निपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थै-
र्मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः" ॥ १४ ॥

२७८ । २९९ । ३२३ ये पलात्मक क्रम और उत्क्रम से रखने से मेषादि ६ राशियों के लङ्कोदय मान होते हैं । इन्हीं में मेषादि ३ राशियों में क्रम से चरखण्ड घटाने से और कर्कादि ३ राशियों में उत्क्रम से तीनों चरखण्ड जोड़ने से स्वदेशीय उदयामन मेषादि ६ राशियों के होते, वे ही उत्क्रम से तुलादिक ६ राशियों के भी होते हैं ॥ १४ ॥

यथा—लङ्कोदय ∓ चरखं=काश्युदय	लंकोदय ∓ चरखं=मिथिलोदय
मे. मी=२७८−५७=२२१	मे. २७८−६०=२१८=मी
वृ. कु=२९९−४६=२५३	वृ. २९९−४८=२५१=कु
मि. म=३२३−१९=३०४	मि. ३२३−२०=३०३=म
क. ध=३२३+१९=३४२	क. ३२३+२०=३४३=ध
सिं वृ=२९९+४६=३४५	सिं. २९५+४८=३४७=वृ
क. तु=२७८+५७=३३५	क. २७८+६०=३३८=तु

लग्न-साधन प्रकार—

सायनार्कस्य भुक्तांशा भोग्यांशाः स्वोदयैर्हताः ।
त्रिंशता विहृता लब्ध-पलानीष्टात् पलीकृतात् ॥१५॥
विशोध्यानि ततो भुक्त-भोग्यराशिपलान्यपि ।
शोध्यान्येवं न यन्मानं शुद्ध्येत् शोऽशुद्धसंज्ञकः ॥१६॥
शेषं त्रिंशद्गुणं भक्त-मशुद्धभवनोदयैः ।
लब्धमंशाद्यशुद्धर्क्षे शोध्यं, योज्यं च शुद्धभे ॥१७॥
क्रमात् सायनलग्नं स्याद् भुक्तभोग्यप्रकारयोः ।
व्ययनांशं च तत् कृत्वा फलार्थं लग्नमाहतम् ॥१८॥

तात्कालिक स्पष्टसूर्य में अयनांश जोड़कर (यदि भुक्तप्रकार से लग्न बनाना हो तो) भुक्तांश को, (यदि भोग्य प्रकार से लग्न बनाना हो तो)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोग्यांश को सायनसूर्यांक्रान्त राशि के स्वोदय मान से गुना कर ३० से भाग देने से लब्धि भुक्त, या भोग्य पल होता है, उसको पलीकृत इष्ट काल में घटाना शेष में (यदि भुक्त प्रकार हो तो) गतराशि के उदयमान (यदि भोग्य प्रकार हो तो) गम्य (अग्रिम) राशि के स्वदेशोदयमान जितने घटे घटाना, जिस राशि तक के उदय घटे उसे शुद्ध संज्ञक और जिसके उदय नहीं घटे उसे अशुद्ध संज्ञक समझना। और इष्ट कालावशेष को ३० से गुनाकर अशुद्धराशि के उदय मान से भाग देकर लब्धि अंशादि को भुक्त प्रकार में अशुद्धराशि संख्या में घटाने से और भोग्य प्रकार में शुद्धराशि सख्या में जोड़ने से सायनलग्न होता है, अतः उसमें अयनांश घटाने से फलकथनोपयुक्त लग्न (प्रथम लग्न) होता है ॥१५-१८॥

भुक्त अथवा भोग्य प्रकार से लग्न साधन का नियम—

दिवागतेष्टे रविभोग्यभागैर्दिवावशेषे सरसार्कभुक्तैः।
निशागतेष्टे सरसार्कभुक्तैर्निशावशेषे रविभुक्तभागैः॥१९॥

(दिनार्ध से अल्प में) दिनगत इष्टकाल और सायन सूर्य पर से भोग्य प्रकार से, यदि दिनशेष (दिनमान में इष्ट घटा कर शेष) इष्टकाल हो तो सायन सूर्य में ६ राशि जोड़कर भुक्तप्रकार से, यदि रात्रिगत इष्टकाल हो तो सायन सूर्य में ६ राशि जोड़कर भोग्य प्रकार से, तथा यदि रात्रिशेष इष्टकाल हो तो सायन सूर्य से भुक्तप्रकार से लग्न बनाने में स्फुटता और सुगमता होती है॥ १९॥

उदाहरण—पूर्वोक्त दिनगत इष्टकाल ३।२५ दिनार्ध से अल्प है अतः भोग्यप्रकार से लग्नानयन करने के लिए स्पष्टसूर्य ९।२९।३६।५३ में अयनांश २१।२५।३ जोड़ने से १०।२१।१।५६ इसके भोग्यांश ८।५८।४ इसको (सायनसूर्य कुम्भ में है अतः) मिथिला देशीय कुम्भोदय २५१ से गुना करने से २००८।१४५५८।१००४ साठ ६० से सवर्णन करने से २२५०।५४।४४ इसमें ३० के भाग देने से भोग्य पलादि ७५।१।४९ इसको इष्टकाल ३।२५ के पल २०५ में घटाने से शेष १२९।५८।११ इसमें भोग्य प्रकार होने के कारण अग्रिम (मीन) राशि के उदय २१८ घटाना चाहिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सो नहीं घटता अतः मीन अशुद्ध हुआ तथा कुम्भ शुद्ध हुआ। अवशेष १२९।५८।११ का ३० से गुना करने से ३८७०।१७४०।३३० साठ से सवर्णन करने से ३८९९।५।३० इसमें अशुद्ध(मीन) के उदय २१८ से भाग देने से लब्धि अंशादि १७।५३।८ इसको शुद्ध राशि कुम्भ की संख्या ११ में जोड़ने से सायन लग्न राश्यादि ११।१७।५३।८ इसमें अयनांश २१।२५।३ घटाने से फल कथनार्थ स्पष्ट प्रथम लग्न राश्यादि १०।२६।२८।५ हुआ ॥ १९ ॥

लग्नानयन में विशेष—

भुक्तभोग्यपलान्येवं निजेष्टादधिकानि चेत् ।
तदेष्टात् त्रिंशता निघ्नात् सूर्याक्रान्तोदयैर्हृतात् ॥२०॥
लब्धांशौ रहितो युक्तो रविरेव तनुर्भवेत् ।

पूर्वोक्त क्रिया से भुक्त प्रकार में भुक्त पल, और भोग्य प्रकार में भोग्य पल यदि इष्ट काल से अधिक हो तो उस हालत में पलीकृत इष्ट काल को ३० से गुना कर सूर्य जिस राशि में हो उसके स्वदेशीय उदय-मान से भाग देकर लब्ध अंशादि (भुक्तप्रकार में) सूर्य में घटाने से और (भोग्य प्रकार में) सूर्य में जोड़ने से लग्न हो जाता है ॥ २० ॥

उदाहरण—यदि इष्टकाल घट्यादि १ । ५ हो तो इसके पल ६५ से पूर्व साधित रवि के भोग्य पल ७५।१।४९ अधिक है इसलिये नहीं घट सकता है, अतः यहाँ इष्ट पल ६५ को ३० से गुना कर १९५० इसमें सायन सूर्य के उदय २५१ से भाग देने से अंशादि ७।४६।८ इसको स्पष्ट सूर्य १।२९।३६।५३ में जोड़ने से १०।७।२३।१ यह स्पष्ट प्रथम लग्न हुआ ।२०।

फिर विशेष—

"लग्नं तूदयकाले स्यात् रविरेव हि सर्वदा ।
अस्तकाले षडभार्कतुल्यं ज्ञेयं विपश्चिता ॥२१॥

सूर्योदय काल में स्पष्ट सूर्य ही लग्न भी होता है । तथा सूर्यास्त समय में स्पष्ट सूर्य में ६ राशि जोड़ने से लग्न होता है ॥ २१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ दशमलग्न-साधनार्थं नतकालानयन—

पूर्वं नतं स्याद् द्युदलाल्पमिष्टं
दिनार्धमानात् प्रविशोध्य शेषम् ।
इष्टे दिनार्धादधिके विशोध्यं
दिनार्धमिष्टादपरं नतं स्यात् ॥ २२ ॥
एवं स्वबुद्धया सुधिया विधेयं
रात्र्यर्धतो रात्रिगतं नतं च ।

दिनार्ध से अल्प इष्टकाल हो तो दिनार्ध में इष्टकाल घटाकर शेष दिवा पूर्वनत होता है। तथा दिनार्ध से अधिक दिवा इष्ट काल में दिनार्ध घटाने से दिवा पश्चिम नत होता है। एवं दिनमान से अधिक इष्टकाल हो तो उस में दिनमान घटाकर शेष रात्रि गत इष्ट कहलाता है। वह रात्रिगत इष्ट यदि रात्र्यर्ध से अल्प हो तो रात्र्यर्ध में घटाकर शेष रात्रि पूर्वनत होता है। यदि रात्रि गत इष्ट रात्र्यर्ध से अधिक हो तो उसी में रात्र्यर्ध घटाने से रात्रि पश्चिम नत होता है॥

उदाहरण–यथा पूर्वोक्त इष्टकाल ३।२५ दिनार्ध १३।४७ से अल्प है अतः दिनार्ध में इष्टकाल घटाकर शेष १०।२२ यह दिवा पूर्वनत हुआ।२२।

अथ दशम चतुर्थ भावानयन प्रकार—

लङ्कोदयैः पूर्वनतात् प्रसाध्यं
सुक्तप्रकारेण पुरोदितेन ॥ २३ ॥
भोग्यप्रकारेण परान्नताद्य-
ल्लग्नं भवेत् तद्दशमाभिधानम् ।
रात्रौ प्रसाध्यं च सषड्भसूर्यात्
तत् षड्भयुक्तं च चतुर्थलग्नम् ॥ २४ ॥

यदि दिवा पूर्व नत हो तो नत को इष्टकाल मानकर लङ्कोदय के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारा भुक्त प्रकार से, तथा यदि पश्चिम नत हो तो भोग्य प्रकार से पूर्ववत् सायन सूर्य से लग्न बनाने से दशम लग्न होता है। यदि रात्रि गत नत काल हो तो सायन सूर्य में ६ राशि जोड़कर उक्त रीति से रात्रिगत नतकाल इष्ट मान कर दशमलग्न बनाना, दशमलग्न में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ लग्न होता है॥ २४॥

उदाहरण—दिवा पूर्वनत १०। २२ यह इष्ट काल हुआ। पूर्व नत होने के कारण भुक्त प्रकार के क्रिया होगी, सायन सूर्य १०। २१।१। ५६ के भुक्तांश २१। १। ५६ को कुम्भ के लङ्कोदय २९९ से गुना करने से ६२७९। २९९। १६७७४, साठ से सवर्णन करने से ६२८८। ३३। ३४ इसमें ३० के भाग देने से २०९। ३७। १७ इसको नतकाल के पल ६२२ में घटाने से शेष ४१२। २२। ४३ इसमें गत मकर राशि के लङ्कोदय ३२३ घटाने से शेष ८९। २२। ४३ इसमें धनु के उदय ३२३ नहीं घटता इसलिये धनु अशुद्ध हुआ। अतः शेष ८९। २२। ४३ को ३० से गुनाकर २६७०। ६६०। १२९०=२६८१। २१। ३० इसमें अशुद्ध धनु के लङ्कोदय २२३ से भाग देने से लब्धि अंशादि ८। १८। ५ इसको अशुद्धराशि संख्या ९ में घटाने से ८। ३१। ४१। ५५ इसमें अयनांश २१। २५।३ घटाने से ८। ०। १६।। ५२ यह दशम लग्न हुआ। दशम लग्न में ६ राशि जोड़ने या घटाने से २।०।१६।५२ यह चतुर्थ लग्न हुआ ॥२३-२४॥

दशम लग्न में विशेष—

ज्ञेयं दिवा नताभावे रविरेव खलग्नकम्।
एवं रात्रिनताभावे सषड्भरविणा समम्॥ २५॥

यदि दिन में नत शून्य हो तो स्पष्ट सूर्य के तुल्य ही दशम लग्न होता है। तथा रात्रि में नत शून्य हो तो स्पष्ट सूर्य में ६ राशि जोड़ने से दशम लग्न होता है॥ २५॥

अथ स-सन्धि भावानयन का सरलप्रकार—

लग्नं सषड्भमस्तर्क्षं तथा लग्नोनतुर्यतः।
षष्ठांशयुक्तनुः सन्धिरषग्ने षष्ठांशयोजनात्॥ २६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रयः ससन्धयो भावा ज्ञेयबुद्धिमता ततः।
त्रिद्विभावौ क्रमायुक्तौ द्वाभ्यां वेदैः श्रुतद्विषौ ॥२७॥
षड्भावा इति लग्नाद्याः सषड्भाः सप्तमादयः।
त्रि-द्व्येकसन्धयस्त्वेक-त्रि-पञ्चभयुताः क्रमात् ॥२८॥
सन्धयः स्युश्चतुर्थाद्याः सषड्भाः षडमी परे।
ग्रहः सन्धिद्वयान्तःस्थो ज्ञेयस्तद्भावगः सदा ॥२९॥

लग्न में ६ राशि जोड़ने से सप्तमभाव होता है। तथा लग्न को चतुर्थ भाव में घटाकर शेष के षष्ठांश लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि होती है। उसमें फिर वही षष्ठांश जोड़ने से द्वितीय भाव, द्वितीय भाव में उसी षष्ठांश को जोड़ने से द्वितीय भाव की सन्धि, द्वितीय की सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से तृतीय भाव, तृतीय भाव में षष्ठांश जोड़ने से तृतीय भाव की संधि होती है। तथा तृतीय भाव में २ राशि जोड़ने से पञ्चम भाव होता है। और द्वितीय भाव में ४ राशि जोड़ने से षष्ठ भाव होता है। इस प्रकार लग्नादिक ६ भाव होते, उन प्रत्येक में ६, ६ राशि जोड़ने से सप्तम आदि ६ भाव भी हो जाते हैं। तृतीय सन्धि में १ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि होती, द्वितीय की सन्धि में ३ राशि जोड़ने से पञ्चम की सन्धि, और प्रथम लग्न की सन्धि में ५ राशि जोड़ने से षष्ठ-भाव को सन्धि होती है। तथा प्रथम आदि की सन्धि में ६, ६ राशि जोड़ने से सप्तम आदि ६ भावों की सन्धियाँ होती हैं। तथा जिन दो सन्धियों के बीच में ग्रह हों उन दोनों सन्धि के मध्यवाले भाव में ही उस ग्रह को समझना और उसी भाव के फल वह ग्रह देता है ॥२६-२९॥

उदाहरण—पूर्व साधित प्रथम लग्न १०। २६। २८। ५॥ सप्तम लग्न ४। २६। २८। ५॥ चतुर्थ लग्न २। ०। १६। ५२॥ दशम लग्न ८। ००। १६। ५२। ॥२६–२९॥

प्रथम लग्न को चतुर्थ लग्न में घटाने से शेष ३। ३। ४८। ४७ इसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठांश ०।१५।३८।७।५० इसको लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि, फिर उसमें षष्ठांश को ही जोड़कर द्वितीय भावादिक होते हैं, जैसे—

षष्ठांश = ०।१५।३८।७।५०

लग्न = १०।२६।२८।५।००

लग्न सन्धि = ११।१२।६।१२।५०

द्वितीय भाव = ११।२७।४४।२०।४०

द्वितीय सन्धि = ००।१३।२२।२८।३०

तृतीय भाव = ००।२९।०।३६।२०

तृतीय सन्धि = १।१४।३८।४४।१०

इस प्रकार ससन्धि तीन भावों के साधन करके तृतीय भाव में २ राशि जोड़ने से पञ्चम भाव = २।२९।०।३६।२०

द्वितीय में ४ राशि जोड़ने से षष्ठभाव = ३।२७।४४।२०।४०

तृतीय सन्धि में १ राशि जोड़ने से चतुर्थ सन्धि = २।१४।३८।४४।१०

द्वितीय सन्धि में ३ राशि जोड़ने से पञ्चम सन्धि = ३।१३।२२।२८।३०

लग्न सन्धि में ५ राशि जोड़ने से षष्ठ की सन्धि = ४।१२।६।१२।५०

इस प्रकार ससन्धि लग्नादि ६ भाव बने। लग्नादि भाव और सन्धि में ६, ६ राशि जोड़ने से ससन्धि सप्तमादि भाव होते हैं। जैसे—

सप्तम भाव ४।२६।२८।५॥ सप्तम सन्धि ५।१२।६।१२।५०
अष्टम भाव ५।२७।४४।२०।४०॥ अष्टम सन्धि ६।१३।२२।२८।३०
नवम भाव ६।२९।०।३६।२०॥ नवम सन्धि ७।१४।३८।४४।१०
दशम भाव ८।००।१६।५२॥ दशम सन्धि ८।१४।३८।४४।१०
एकादश भाव ८।२९।०।३६।२०॥ एकादश सन्धि ९।१३।२२।२८।३०
द्वादश भाव ९।२७।४४।२०।४०॥ द्वादश सन्धि १०।१२।६।१२।५०

इस प्रकार ग्रहभावस्पष्टीकरण करके जन्मपत्र लिखने का उदाहरण—

आदित्यादि-ग्रहाः सर्वे स-नक्षत्राः स-राशयः ।
दीर्घं तदायुः कुर्वन्तु यदीया जन्मपत्रिका ॥

शुभश्रीशालिवाहनशकाब्दे १८४८, श्रीवीरविक्रमसंवत्सरे १९८३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फसलीसनाब्दे १३३४ मासोत्तमे माघे मासे शुक्लपक्षे एकादश्यां तिथौ दं० २९।३ मृगशिरोनक्षत्रे दं० ४।२१ विष्कम्भयोगे दं० ३४।७ विष्टिकरणे २९।३ शनिवासरे, श्रीमन्मार्तण्डमण्डलार्धोदयादिष्टघटीपलात्मके ३।२५ समये-कुम्भलग्नोदये, शनिगृहे चन्द्रहोरायां, शुक्रद्रेष्काणे, शुक्रनवमांशे, गुरुद्वादशांशे शुक्रत्रिंशांशे एवं शुभग्रहाधिकशालिनि षड्वर्गे शुभावलोकितवेलायां चतुर्धुरीणोपाख्य—बाबू-श्रीशिवशङ्करशर्मणः स्वधर्मभार्यायां देवद्विजप्रसादादुभयकुलानन्दकरः श्रीमान् द्वितीयः पुत्रो जातः। तदेतस्य शतपदचक्रानुसारेण मृगशिरोनक्षत्रस्य चतुर्थचरणे जन्मत्वात् 'कीर्तिनाथ' इति राशिनाम प्रसिद्धम्। अत्र भयातम् ५८।१५, भभोगः ५९।३१, दिनमानम् २७।३४ रात्रिमानम् ३१।२६ ॥ जातकोऽयं मिथुनराशिः, राशिवर्णः शूद्रः, सर्पयोनिः, देवगणः, मध्यनाडीकः, इत्यादिकं विवाहादौ शुभकार्ये विचार्यम्। शुभमस्तु। जातकस्य दीर्घायुष्ट्वं भूयात्।

अथ जन्मलग्नकुण्डलीयम्

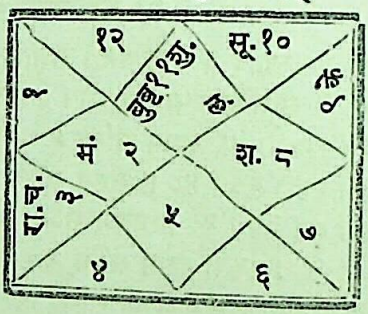

चन्द्र कुण्डली, भाव कुण्डली आदि लिखने की रीति और सयुक्तिक षड्वर्ग विचार आदि विषय द्वितीय प्रकाश में स्पष्टरूप से लिखा गया है॥

वेदाब्धिवस्विन्दुशके मृगार्के, सीतादिरामाभिधमैथिलेन।
बालप्रमोदाय विकाशितोयं, लग्नप्रदीपे प्रथमः प्रकाशः॥

॥ शुभम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं० श्रीसीतारामझाकृतपुस्तकानि—

अवकहड़ाचक्रसहित—व्यवहारविवेक ।≡) अहिबलचक्र—भा०टी०।)
केशवीयजातकपद्धति—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं०टी०, भा०टी० २।।)
केरलप्रश्नसंग्रह—भा० टी० ॥) खेटकौतुक—भा०टी० ।=)
गोलपरिभाषा—ज्याक्षेत्रविचारसहित ।) गणितसोपान— ।=)
गगनमनोरमा—भा० टी० ≡)
ग्रहलाघव—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० ३॥)
जातकालङ्कार—सं० टी०, भा० टी० ।।।)
जैमिनिसूत्र—सं० टी०, भा० टी० १॥)
ताजिकनीलकण्ठी—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० ३॥)
धराचक्र—भा० टी० ।-) पद्मकोष—भा० टी० ।=)
नाड़िदत्तपञ्चविंशतिका—भा० टी० =)
भावप्रकाशज्यौतिष—भा० टी० ॥)
भावफलाध्याय—भा० टी० ≡ बृहत्पाराशरहोरा (उत्तरखण्ड) ५)
मुहूर्तचिन्तामणि—सान्वय भा०टी० ३) ,, सम्पूर्ण यन्त्रस्थ
मुहूर्तमार्तण्ड—सं० टी०, भा० टी० २॥) सारावली यन्त्रस्थ
रेखागणित—षष्ठाध्याय ।=) लघुजातक—सं०टी०, भा० टी० १॥)
लघुपाराशरी—मध्यपाराशरी, सोदाहरण, भा० टी० १।)
लग्नवाराही—भा० टी० =)
लीलावती—सोदाहरण, सोपपत्ति, सं० टी०, भा० टी० २॥)
विवाहवृन्दावन—सं० टी०, भाषा टीका २॥)
शीघ्रबोध—भा० टी० १) बृहज्जातकम् सं० टी० भा० टी० ३)
षट्पञ्चाशिका—सं० टी०, भाषा टीका ॥)
सूर्यसिद्धान्त—सुधातरङ्गिणी टीका सहित ३॥)

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,

संस्कृत बुकडिपो, कचौड़ीगली, बनारस-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh